शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लोक एवं जनजातीय साहित्य में मूल्य चेतना

(निमाड़ी लोक-साहित्य के संदर्भ में)

डा. जगदीश चौहान (अध्यापक)
शा.हाई स्कूल, मनावर
धार, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

निमाड़ क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से अपना परिचय तथा अपनी पहचान बनाए हुए है। यह क्षेत्र भाषा एवं संस्कृति के साथ-साथ रहन-सहन खान-पान रीति-रिवाज, लेखन-कलाम, नृत्य-कला, कहावतों, धार्मिक परम्पराओं आदि की दृष्टि से अपनी पृथक् से पहचान रखता है। विभिन्न प्रकार की कलाओं से परिपूर्ण यह क्षेत्र ऐतिहासिक धरोहर तथा संत-परम्परा को भी अपने में समेट हुए है। ये समस्त विशेषताएँ निमाड़ क्षेत्र को एक विशिष्ट गौरव से आप्लावित किये हुए हैं। यहाँ के साहित्यकार देश के उत्थान के प्रति अपनी चिंता जाहिर करते हैं। दूर-दराज के गाँव में बैठे साहित्यकार किसी भी घटनाक्रम से निर्लिप्त नहीं हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में निमाड़ी साहित्यकारों के काव्य पर चिंतन किया गया है।

निमाड़ का नामकरण

मध्यप्रदेश में निमाड़ क्षेत्र स्थित है। निमाड़ क्षेत्र के नामकरण के संबंध में मतभेद मिलते हैं। संस्कृत साहित्यकार भवभूति ने अपने ग्रंथ उत्तररामचरित में एक श्लोक में इस शब्द का उल्लेख किया है :

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु
बैखानसाश्रिततरूणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमाः यमिनो भजन्ते।
नीवारर्मुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि।।

उक्त श्लोक की अंतिम पंक्ति में आये नीवार शब्द का अर्थ चावल होता है। इस प्रदेश के तपस्वी ऋषि-मुनि इसे सेवन किया करते थे। इसीलिए इस क्षेत्र को नीमाड़ व बाद में निमाड़ के नाम से जाना जाने लगा। दूसरा तर्क यह भी है कि मालवा क्षेत्र से नीचे की ओर होने से भी यह भू-भाग निमाड़ कहलाया। साथ ही यह भी कहा जाता है कि यहाँ नीम के वृक्षों की अधिकता है इसलिए भी इस क्षेत्र को निमाड़ नाम से दिया गया।

चाहे कोई-सा भी तर्क मान्य किया जाय लेकिन यह क्षेत्र अपने नाम के कारण भी और अपने पौराणिक महत्व के कारण भी बहुत प्रसिध्द है। गंगा से भी प्राचीन माँ नर्मदा तथा हिमालय से भी प्राचीन विंध्याचल पर्वत निमाड़ व मालवा की सीमा का विभाजन किये हुए है। पौराणिक महत्ता के साथ-साथ यह भू-भाग अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण भी अपनी पहचान बनाये हुए है। इन्दौर गजेटियर में इसका प्रमाण देते हुए लिखा गया है - "निमाड़ भू-भाग का इतिहास तीसरी शताब्दी से प्राप्त है। तीसरी शताब्दी में इसके उत्तरी भाग पर हैहयवंशीय राजाओं का अधिकार था, जिसकी राजधानी माहिष्मती थी। ऐसा ज्ञात होता है कि यह वंश सर्वप्रथम 240 में महेश्वर आया। निमाड़ क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी बहुत उन्नत रही है। इस

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संदर्भ में निमाड़ क्षेत्र के प्रख्यात साहित्यकार एवं हिन्दी साहित्य के ललित निबंधकारों में अपनी प्रधानता स्थापित करने वाले डा. श्रीराम परिहार ने लिखा है, "निमाड़ की संस्कृति भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पोषक अंग है। ढाई लाख वर्ष पूर्व नर्मदा के किनारे मनुष्य के चलने की आहट पैदा हो गई थी। तब से लेकर आज तक मानवीय सभ्यता के विभिन्न सोपानों में निमाड़ ने मनुष्य के कोण से सांस्कृतिक संदर्भों के रंग भरे हैं।"

यहाँ की विभिन्न कलाएँ प्रसिद्ध हैं। साहित्यिक कला की दृष्टि से भी यह भू-भाग अपनी विशेष पहचान रखता है। इस संबंध में डा. धर्मवीर भारती ने अपनी विचाराभिव्यक्ति की है - निमाड़ की पहाड़ियों पर पलाश के वृक्ष भी फूलते हैं और उनकी छाया में मौत भी सिसकती है और शहनाइयाँ भी बजती हैं। इन लोक गीतों में उन सबों के रंग उतर आये हैं उन सबों की प्रतिध्वनियाँ गूंज गई हैं। साहित्यिक क्षेत्र में भी निमाड़ के साहित्यकार पीछे नहीं हैं। साहित्यकार के संदर्भ में कहा भी जाता है कि वह किसी भाषा क्षेत्र काल और स्थान के बंधन में आबद्ध नहीं होता। वह तो निर्बाध विचार अभिव्यक्त करने वाला कलाकार होता है। साहित्यकार कभी भी अपने कर्तव्य से विरत् नही होता इसलिए वह अपनी कलम की शक्ति का प्रभाव सदैव फैलाता रहता है। इसी परम्परा और प्रवृत्ति का निर्वहन निमाड़ क्षेत्र के कलमकारों ने भी किया है। वे अपने मन-मस्तिष्क में उठने वाले जनहित के विचारों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते रहे हैं। इन निमाड़ी साहित्यकारों से भी समाज का कोई क्षेत्र या पक्ष अछूता नहीं रहा है।

समाज व देश में हो रहे मानवीय गुणों के अवमूल्यन पर भी इनकी कलम अनूठे प्रकार से चली है। देश में बदलते राजनीतिक परिवेश तथा सत्ता तथा सत्ता लिप्सा पर श्रीमती तारादेवी करील ने सटीक लिखा है -

अवें कसो होयगो कल्याण म्हारा देस को।
कुरसी का लेण लडज् इंसान म्हारा देस को।।
प्रजातंत्र का नाम पै पनपी रइज उद्दंडता ।
बली रयोज् झंडो न संविधान म्हारा देस को।।

देश की वर्तमान स्थिति पर निमाड़ी कवि स्व. लक्ष्मणसिंह दसौंधी लिखते हैं :

बादल फाट्यो सियो नी जाय।
देख्यो जहेर पियो नी जाय।।
लाख सान्ति खँ माना पण।
नकटा हुइ नै जियो नी जाय।6

निमाड़ी कवि की उक्त पंक्तियाँ यह सिद्ध करती हैं कि साहित्यकार कालजयी होते हैं। उनके द्वारा रचा गया साहित्य भविष्य का आगाज होता है। वर्तमान में भारत-पाकिस्तान के संबंधों को लेकर जिस प्रकार का वातावरण निर्मित हुआ है उस पर ये पंक्तियाँ पूर्णतः सत्य सिद्ध होती हैं। साथ ही वर्तमान में देश की सरकार को क्या निर्णय लेना चाहिए इसका समाधान भी इस कविता में निहित है।

देश में मानव-मूल्य किस स्तर तक गिर गए हैं इस संबंध में श्री त्रिभुवनसिंह ने अपनी इस कविता में इसका स्पष्ट उल्लेख किया है-

जिन्ननै भारत की आजादी
आपणा खून-सी लहराई
उनखै हम सब भूली गयाज्न
रिस्वतखोर भ्रष्टाचारी
धवलाफक वस्त्रधारी
खून चूसण्या माखण्या न को
सम्मान-समारोह मनइरयाज्।
हाय राम! कसो बखत आइ गयोज्।7

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आज लोगों की विचारधारा बदल गई है। उन महान् लोगों के स्मृति-दिवस मनाकर उन्हें विस्मृत कर दिया जाता है, जिन्होंने अपने प्राण देश की आजादी के लिये गवाँ दिये थे। अब तो लोग धन को मान देकर चाटुकारिता व चापलूसी में लगे हुए हैं।

इस अवमूल्यन के कारण ही देश का विकास अवरूद्ध हो गया है। निमाड़ क्षेत्र के बाड़ी गावं (खरगोन) के कवि ने देश के विकास की चिंता को अपनी कविता में अभिव्यक्ति दी है -

भारत गाँव न को देस छे
पण गाँव मै भी बचेल काइ छे।
आजादी का छप्पन बरस बीती रयाज्।
पण गाँव वाला विकास खै झीकी रयाज्।।8

आज भी गाँव विकास की राह देख रहे हैं, लेकिन सत्ता-लिप्सा वाले अपनी स्वार्थ पूर्ति में संलग्न हैं तो उन्हें दूसरों के विकास की सुध कहाँ होगी। मानव-मूल्य इस कदर गायब हो गए हैं जैसे गधे के सिर से सींग। इसके साथ ही मानव की प्रकृति प्रदत्त मुस्कान भी इस अवमूल्यन में कहीं खो गई। वह भी इसकी भेंट चढ़ गई है। इसी संदर्भ में श्री गोविन्द सेन जी (मनावर धार) ने लिखा है-

फिर है वही उदासियाँ बुझे-बुझे अरमान।
चेहरे को अलविदा चली गई मुस्कान।।
कांटे तो कायम रहे मुरझायी मुस्कान।
सदियों से कुचले गये फूलों के अरमान।।9

सत्ता में विद्यमान सत्ताधारी लोग किस तरह नैतिकता को विस्मृत कर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। पद पाते ही शायद उनसे मानवता व नैतिकता ही लुप्त हो जाती है -

सत्ता सुंदर है बड़ी सत्ता है मगरूर।
सत्ता पा होते सभी इसके मद में चूर।।
हमने देखा रोज ही पानी होता खून।
इस सत्ता के सामने बौने हैं कानून।।10

और -

काम-क्रोध-मद-लोभ से रह न पाए दूर।
यहाँ सियासी शेर हैं सत्ता में चूर।।11

समाज में दहेज की बीमारी आज भी व्याप्त है। इस कुप्रथा को मिटाने के लिए अनेक प्रयास किये गए, लेकिन आज तक यह पूर्ण रूप से समाज से समाप्त नहीं हुई। आज भी समाचार पत्रों में व दूरदर्शन पर क्रमशः पढ़ने सुनने व देखने को मिल ही जाती है। लोगों का धन के प्रति लालच अब भी बना हुआ है। बहू चाहे कैसी भी हो लेकिन दहेज बहुत अच्छा और ज्यादा मिलना चाहिए। श्री गोविन्द सेन जी ने निमाड़ी हाइकू विधा में इस कुप्रथा पर तीखा प्रहार किया है -

सबकी निगा
दायजा पै गड़ेल
लाड़ी कसी बी।।12

समाज में ऐसे लोग भी हैं जो अपने मूल स्वभाव को छिपाकर समय आने पर वार करने से नहीं चूकते। ऐसे लोगों पर भी श्री सेन जी ने तंज कसा है -

घात करैज
मीठो मीठो बोली नैड
मीठी छुरी छे
श्याणो बणैज
टाटा की आड़ लीनै
तीर चलावै 13

समाज व देश में समभाव फैलाने की पहल भी निमाड़ी साहित्यकारों ने की हैं। डॉ. जगदीशचन्द्र चौरे ने अपनी निमाड़ी कविता में व्यक्त किया है

म्हारो खून लाल छे
थारो भी लाल छे

जसो हाऊँ माय को लाड़लो
वसोज् तू भी छे ।
थारो-म्हारो
खून एक जसो
तन एक जसो
फिर मन मै अलगाव क्यों
राम न रहीम मै भेदभाव क्यों 14

प्रो. महेश साकल्ये ने देश की दुर्दशा को स्पष्ट रूप से अंकित किया है। उनके द्वारा रचित निमाड़ी कविता 'देस को हाल' इसका अच्छा उदाहरण है -

इना देस को असो काइ हाल हुइ गयो।
सोन्ना की चिड़इ थी कंगाल हुइ गयो।।
पड़तो थो टेम पै पाणी हरियालइ रयती थी।
पड़ी गयो अकाल सूको साल हुइ गयो।।
होता था चुनाव हर पांच साल मँ।
अवें तो चुनाव को हर साल हुइ गयो।।a
सफा झक चेहरा वालो म्हारो भारत देस।
हवाला जसी छुरी न सी हलाल हुइ गयो।।
आपणी सभ्यता न संस्कृति खै गिरवै भारी न।
महेश कसो भारत देस निहाल हुइ गयो।।15

निष्कर्ष

निश्चित रूप से लोक एवं जनजातीय साहित्य ने समाज व देश में मानव-मूल्यों के अवमूल्यन पर अपनी कलम चलायी है। साथ ही उन लुप्त होते हुए मानव-मूल्यों को स्थापित करने हेतु भी उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से पहल की है ताकि भारत को गौरवशाली बनाया जा सके। यहाँ के रीति-रिवाज, परम्पराएं, संस्कृति, विभिन्न कलाएं, धार्मिक मान्यताएं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निश्चित रूप से उन्नत रही है। मानव-मूल्यों को समाज व देश में पुन:स्थापित करने में साहित्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सजग साहित्यकार इस हेतु सदैव ही प्रयत्नशील रहते हैं। लोक-साहित्य के साहित्यकार भी इस क्षेत्र में सतत् कर्मशील हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 उत्तररामचरितम् - भवभूति- प्रथमांक, पृष्ठ25
2 इन्दौर गजेटियर, पृष्ठ 490
3 निमाड़ी साहित्य का इतिहास, डॉ.श्रीराम परिहार, पृष्ठ 15
4 वही, पृष्ठ 16
5 निमाड़ी साहित्य के कलमकार कलाकार - बाबूलाल सेन, पृष्ठ 159
6 वही, पृष्ठ 111
7 वही, पृष्ठ 128
8 निमाड़ी साहित्य का इतिहास, डॉ.श्रीराम परिहार, पृष्ठ 119
9 खोलो मन के द्वार, गोविन्द सेन, पृष्ठ 16
10 वही, पृष्ठ 18
11 वही, पृष्ठ 20
12 नकटी नाक (निमाड़ी हाइकू), गोविन्द सेन, पृष्ठ 15
13 वही, पृष्ठ 16
14 निमाड़ी साहित्य के कलमकार कलाकार - बाबूलाल सेन, पृष्ठ 153
15 वही, पृष्ठ 195